www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बसंत पर्व पर महाकाल का संदेश

शान्ति कुञ्ज,
हरिद्वार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वसंत पर्व पर महाकाल का संदेश

यह युग संधि के बीजारोपण का वर्ष है। शिलान्यास हमेशा छोटे रूप में होता है, किन्तु समयानुसार देखते-देखते एक विशाल भवन बनकर खड़ा हो जाता है। इन दिनों युग संधि का जो स्वरूप छोटा दिखाई दे रहा है, वह अगले दिनों विशालकाय बोधिवृक्ष का रूप ले लेगा, इसमें किसी को कोई सन्देह नहीं होना चाहिए।

सन् १९९० का वसंत पर्व एक विशिष्ट पर्व है। अब से लेकर सन् २००० तक के दस वर्ष- जोतने, बोने, उगाने, खाद-पानी डालने और रखवाली करने के हैं। जब भी अंतरिक्ष यान छोड़ा जाता है, उलटी गिनती चालू हो जाती है एवं ५, ४, ३, २, १, ० होते ही यान को छोड़े जाने का संकेत दे दिया जाता है। इस वसंत पर्व से इक्कीसवीं सदी के आगमन की उलटी गिनती "काउण्ट डाऊन" प्रक्रिया शान्ति कुन्ज से आरंभ हो चुकी है।

"इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य" का उद्घोष करने वाली सूत्र संचालक सत्ता ने, इसी वसंत से, संभावित उथल-पुथल से निपटने की तैयारी हेतु, अपना प्रत्यक्ष मिलने-जुलने का क्रम अब बन्द कर दिया है। ऋषिकल्प पूज्य गुरुदेव के जीवन रूपी दुर्लभ ब्रह्मकमल के ८० फूल पूरी तरह खिल चुके। संजीवनी बूटी के एक से एक शोभायमान पुष्पों के खिलते रहने का एक महत्वपूर्ण अध्याय पूरा हो चला। जो काम परोक्ष सत्ता द्वारा सौंपा गया था, जिस प्रयोजन के लिए भेजा गया था, वह उनके द्वारा क्रमबद्ध रूप से चलता रहा और दुलार बरसने वाले स्तर के साथ काम पूरा होता रहा। युग परिवर्तन का बीजारोपण कर दिया गया एवं खाद-पानी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देने हेतु समर्थ सहायकों का तंत्र भी जुटता चला गया, इसे ईश्वर की महती अनुकम्पा कहना चाहिए।

सूत्र संचालक सत्ता के इस जीवन का प्रथम अध्याय पूरा हुआ। यह दृश्यमान स्वरूप था, जिसमें "जो बोया-सो काटा" की नीति अपनायी गयी। प्रत्यक्ष काया द्वारा, परोक्ष सत्ता के मार्गदर्शन में जो कुछ भी कर्तव्य बन पड़ा, वह सभी के सामने है। जो जानकारी परिजनों को विदित नहीं थी, उसे जान-बूझकर उजागर नहीं होने दिया गया; शालीनता की मर्यादा भी यही रही है।

अब जीवन का दूसरा अध्याय आरंभ होता है। इसमें जो भी कुछ होना है, वह और भी अधिक महत्वपूर्ण-मूल्यवान है। अध्यात्म विज्ञानी, स्थूल के अतिरिक्त सूक्ष्म व कारण शरीर की सत्ताओं का अस्तित्व बताते रहे हैं। अब इन्हीं दो शरीरों का प्रयोग एक शताब्दी तक किया जाना है। यह कार्य १९९० के वसंत पर्व से आरंभ किया जा रहा है। यहाँ से लेकर सन् २००० के वसंत पर्व तक की अवधि में, विगत दो हजार वर्षों से जमी हुई गन्दगी बुहार-कर साफ कर दी जायेगी एवं उज्ज्वल भविष्य की—नवयुग की आधारशिला रखी जायेगी। शान्ति कुञ्ज में यह निकट भविष्य में ही क्रियान्वित होती दिखेगी।

पूज्य गुरुदेव का सूक्ष्म शरीर, भारत वर्ष के कोने-कोने और विदेशों में बसे भारतीय मूल के विशिष्टजनों के माध्यम से युग-संधि के स्वरूप को व्यापक बनाने में नियोजित होगा। युग चेतना के विस्तार की यह प्रक्रिया अगले दिनों नवयुग के मत्स्यावतार का रूप ले लेगी। इस प्रयोजन के निमित्त जिस उच्चस्तरीय आध्यात्मिक साधना की, रचनात्मक क्रिया-कलापों की आवश्यकता पड़ेगी, उनको समाज में, जन-जन में, कण-कण में, रोम-रोम में समायी सूक्ष्म सत्ता द्वारा, सूक्ष्म शरीर के माध्यम से ही सम्पन्न किया जायेगा। स्थूल शरीर इस प्रक्रिया में चूँकि कोई साथ नहीं दे सकता, इसलिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह पहले ही साथ छोड़ चुका होगा। इसका एक स्पष्ट कारण यह है कि स्थूल शरीर की विधि-व्यवस्था बनाने, परिजनों का इसके प्रति मोह होने से, दर्शन-झाँकी का कौतुक बने रहने से, जो ढेरों समय नष्ट हो जाता है, उसे बचाया जाना है। सूक्ष्म शरीर बिना किसी अड़चन के एक व्यापक क्षेत्र में द्रुतगति से सक्रिय होता रह सकता है। इसी कारण प्रत्यक्ष मिलने-जुलने का क्रम क्रमशः कम करते-करते अब बन्द करने की स्थिति में लाने का निश्चय करना पड़ा।

सूक्ष्म शरीर से भी बड़ी कारण शरीर की सत्ता है। उसका कार्यक्षेत्र अति विशाल है। महाकाल की चेतना, सूक्ष्म शरीरधारी ऋषि सत्ताओं के द्वारा भूमण्डल के जिस बड़े क्षेत्र में सक्रिय हो सकती हैं, वह मात्र कारण शरीर के बलबूते ही सम्भव है। अदृश्य जगत में जो अवांछनीयता घटित हो रही है एवं जिसकी प्रतिक्रिया दृश्य जगत में विभिन्न प्रकोपों-विभीषिकाओं के रूप में दृष्टिगोचर हो रही है, उसमें हस्तक्षेप करने की सामर्थ्य मात्र कारण शरीर में है। इक्कीसवीं सदी में कई ऐसे प्रयास सम्पन्न करने पड़ेंगे, जो स्थूल एवं सूक्ष्म शरीरों की क्षमता से परे है। ब्राह्मी चेतना से जुड़ कर दिव्य कारण शरीर ही उन सब को क्रियान्वित करता है, जिन्हें प्रायः अद्भुत एवं अलौकिक कहा जाता है।

इक्कीसवीं सदी निश्चित ही उज्ज्वल संभावनाएँ लेकर आ रही है। इस अवधि में ऐसे अद्भुत परिवर्तन होंगे, कि यह कैसे हो रहा है और कौन कर रहा है, यह अनुमान लगा पाना बहुतों के लिए कठिन होगा। यह कार्य असामान्य है। सूत्र संचालक ने प्रत्यक्ष मिलने-जुलने का क्रम बन्द कर, सूक्ष्म शरीर से सभी परिजनों से सम्पर्क बनाने एवं दिव्य कारण शरीर द्वारा परोक्ष स्तर पर हो रहे परिवर्तनों में भागीदारी करने का निर्णय लिया हैं। ऐसे में प्राणवान परिजनों पर विशिष्ट जिम्मेदारियाँ आती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भगवान सदैव अपना कार्य महामानवों, देवदूतों, देवमानवों से कराते रहे हैं। अगले दिनों मनुष्य शरीर में प्रतिभावान देवमानव प्रकट होने जा रहे हैं। देवमानवों की प्रकृति होती है, कि वे अपने उपार्जन में से न्यूनतम अपने लिए खर्च करें और शेष को परमार्थ प्रयोजनों के लिए लगा दें। यही अपने समय की साधना, पुण्य-परमार्थ और धर्म-धारणा है।

पूज्य गुरुदेव की समष्टिगत साधना में भागीदारी करने का जिनका मन हो, वे न्यूनतम कार्यक्रम के रूप में इस बसंत पर्व से निम्न संकल्प तो कर ही लें। इन संकल्पों की पूर्ति जो कर सकेगा, वह सहज ही युग अवतरण का श्रेय भी प्राप्त करेगा तथा बड़भागी कहलायेगा। ये संकल्प इस प्रकार हैं:—

[१] माह में एक बार गुरुदेव-माता जी को अपने घर अवश्य बुलायें। यह कार्य अखण्ड ज्योति/युगशक्ति गायत्री आदि में से किसी पत्रिका की एक प्रति अपने यहाँ मंगाने से पूरा हो सकता है। गुरुसत्ता की प्राणचेतना से घनिष्ठता स्थापित करने के लिए यह श्रेष्ठतम माध्यम है। बन पड़े तो पाँच अनुपाठक और तैयार करें तथा प्रत्येक से पाँच-पाँच साथी और बढ़ाने को कहें। युग ऋषि की लेखनी इक्कीसवीं सदी में भी सूक्ष्म शरीर व कारण शरीर के माध्यम से यथावत् चलती रहेगी। अखण्ड ज्योति को मात्र पत्रिका नहीं, उनकी प्रखर चिन्तन-चेतना का जीता-जागता स्वरूप मानें, जो सतयुग की आधारशिला रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रही है। पत्रिकाओं का पठन-पाठन ही परोक्ष रूप से उनके द्वारा दी गयी ज्ञान दीक्षा है।

[२] जन मानस के परिष्कार के लिए युग साहित्य का विस्तार अपने परिकर में झोला पुस्तकालय अथवा ज्ञानरथ [चल-देवालय] द्वारा करें। लोगों की दुर्बुद्धि को ठीक करने का यही सबसे सशक्त माध्यम है। विचार क्रांति इसी से होगी। इक्कीसवीं-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सदी संबन्धी नूतन साहित्य जो इन्हीं दिनों लिखा गया है, स्वयं भी पढ़ें, न्यूनतम अपने मण्डल के पच्चीस साथियों को भी पढ़ायें। स्मरण रखें कि विद्या विस्तार ही युग की सबसे बड़ी सेवा है। मनःस्थिति बदलने, लोगों की संकीर्ण स्वार्थपरता दूर करने के लिए युग साहित्य से श्रेष्ठ कोई माध्यम नहीं। अभी तक जितनी भी विश्वव्यापी क्रान्तियाँ हुई हैं, वे साहित्य के माध्यम से ही सम्पन्न हुई हैं। सद्विचारों का बीजारोपण किया जा सके, तो नवयुग के लिए महामानव तैयार किये जा सकेंगे।

[३] अपने समय एवं उपार्जन का एक अंश नियमित रूप से निकालें एवं सत्प्रवृत्ति संवर्धन हेतु उनका नियोजन करें। प्रतिदिन २ घण्टे या प्रति सप्ताह एक नियत समय युग चेतना के विस्तार हेतु तथा बीस पैसा प्रतिदिन या माह में एक दिन की आजीविका नवसृजन के कार्यक्रमों के निमित्त निकालें। यदि इतना बन सके, तो यह कहा जा सकेगा कि परिजनों में संवेदना जाग्रत है–जीवन्त है। निकाले गये समय का उपयोग जन-जन में "२१वीं सदी उज्ज्वल भविष्य" के प्रति आस्था जगाने में किया जाय। इसके लिए युग साहित्य, गोष्ठी, व्याख्यान, युग संगीत, दीपयज्ञ, जन्मदिन, तीर्थयात्राएँ आदि किन्हीं भी विधाओं का उपयोग अपनी रुचि और सामर्थ्य के अनुसार किया जा सकता है। अंशदान द्वारा इनके लिए साधन जुटाये जाते रह सकते हैं। इस न्यूनतम सेवा साधना में निष्ठापूर्वक लगे रहने वाले, कम से कम एक लाख लोकसेवी तैयार करने का संकल्प है।

[४] नवयुग की अभ्यर्थना अगले दिनों दीपयज्ञ मालिका द्वारा की जानी है। इसके लिए इसी वर्ष एक लाख यज्ञों– देव-संगठनों के लिए एक करोड़ याजक तैयार किये जाने हैं। प्रथम महापूर्णाहुति तक तो यह संख्या करोड़ों-अरबों तक जा पहुँचेगी। इन याजकों को साथियों समेत तीन या पाँच की मण्डली बनाकर इसी वर्ष शान्ति-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुञ्ज आने को कहा गया है, जहाँ उन्हें संक्षिप्त भावपूर्ण समारोह में प्रतिनिधि दीक्षा दी जायेगी, यज्ञ विधि, विस्तार से समझायी जायेगी तथा वंदनीया माता जी के हाथों प्रत्येक को अपने पाँच सहयोगियों के लिए कलावा, रोली, अक्षत, पुष्प प्रदान किये जायेंगे। इस प्रकार पाँच से पच्चीस तक बढ़ते-बढ़ते दीपयज्ञ आयोजन कर्त्ता अपने साथी-सहयोगियों को भी इस पुण्य कार्य में सहभागी बना सकेंगे। सभी से कहा गया है कि याजक बनने हेतु एक बार अपनी मण्डली लेकर शान्तिकुञ्ज हो आयें तथा अपना पुरुषार्थ संजोकर अधिक से अधिक साथी, युग शक्ति के साझीदार तैयार कर लें।

[५] साप्ताहिक सत्संग का आयोजन नियत स्थान पर करें। और कुछ न बने, तो टेप के माध्यम से सहगान कीर्तन वंदनीया माता जी के साथ; चौबीस गायत्री मंत्र पूज्य गुरुदेव के साथ उच्चारित कर, ऋषि चेतना से अपने आप को जोड़ें। इन माध्यमों से युग ऋषि के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का पुण्य कमायें। आज के युग की यह महत्वपूर्ण सेवा है। यदि सप्ताह में एक बार भी मण्डल के सभी सदस्य बैठकर नूतन विचारों को सुनने, सत्प्रवृत्ति संवर्धन के कार्यक्रम बनाने, नये परिजनों को साथ जोड़ने तथा परिवार के प्रमुखों के जन्म दिवस मनाने का उपक्रम चलाने लगें, तो साप्ताहिक सत्संग वे बड़े प्रयोजन पूरा कर सकते हैं, जो एक जाग्रत प्रज्ञा संस्थान कर सकता है।

[६] अपने मोहल्ले, समीपवर्ती स्थानों, अथवा कस्बों की प्रभातफेरी साइकिल यात्रा के माध्यम से सम्पन्न करें। यही इस युग की तीर्थ यात्रा है। घर-घर अलख जगाने हेतु संगीत प्रचार उपकरणों से सज्जित साइकिलों द्वारा सप्ताह में एक बार समूह सहित निकल सकें, तो नवयुग के आगमन का उद्घोष जन-जन तक पहुँच सकेगा। "नया संसार बसाने" "नया इंसान बनाने" के लिए, अगले दिनों सारे भारत में एक लाख साइकिलों की तीर्थ-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यात्रा सतत चलाते रहने का युग ऋषि का मन है। उन्हें आशा है उनका यह संकल्प अवश्य पूरा होगा। यदि भारत माता की आत्मा को जगाना है, तो गाँव-गाँव–घर-घर तक पहुँचने के लिए साइकिल यात्राओं की इस प्रक्रिया का ही प्रयोग करना होगा।

[७] महापूर्णाहुति तक, एक या दो वर्ष में एक बार सिद्धपीठ शान्तिकुञ्ज की तीर्थ चेतना से अनुप्राणित हो, शक्ति संचय, 'बैटरी चार्ज' कराने के लिए किसी एक सत्र में सम्मिलित होने का संकल्प लें। संभव हो तो अपना जन्मदिवस यहीं मनायें। स्मरण रखें गुरुदेव-माताजी की प्राण–ऊर्जा इस तीर्थ परिकर में विशेषरूप से आगामी दस वर्ष तक और तदुपरांत एक शताब्दी तक घनीभूत रूप में विद्यमान रहेगी। वर्ष में एक बार आने से वह लाभ मिलता रहेगा, जो उनकी साधना में भागीदारी से किसी को मिल सकता है। पाँच दिवसीय सत्रों में, परिजनों द्वारा उठाये जा रहे उत्तरदायित्वों के अनुरूप प्राण–अनुदान देकर, उन्हें समर्थ अग्रदूत के रूप में विकसित करने का सशक्त प्रयास किया जा रहा है। नैष्ठिक प्रतिभावानों को इस लाभ से वंचित नहीं रहना चाहिए।

उपरोक्त सातों सूत्रों को वसंत पर्व पर– पूज्य गुरुदेव के आध्यात्मिक जन्मदिवस पर दिया गया विशेष उद्‌बोधन मानें तथा उनके दर्शन प्रत्यक्ष न हो पाने की स्थिति में भी, उनके सूक्ष्म शरीर तथा कारण शरीर की दिव्य चेतन-ऊर्जा से सम्पर्क जोड़ने का प्रमुख माध्यम मानें। ध्यान रखें कि अभी तक महाकाल की शक्ति से किये गये सभी संकल्प पूर्ण हो कर रहे हैं। अतः अपने को अर्जुन, हनुमान, शबरी, केवट की श्रेणी में रखते हुए, निमित्त मात्र मानकर श्रेय अर्जित करने का यह सौभाग्य हाथ से न जाने दें।

मूल्य– दस पैसे

मुद्रकः—युगान्तर चेतना प्रेस, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org